Dattopant Thengadi Foundation

दिनांक: २६ जुलाई, २०२१

वर्तमान सन्दर्भ में दत्तोपंत ठेंगड़ी

इस १० नवंबर को भारत सरकार ने स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी पर डाक टिकट जारी कर उनके सामाजिक क्षेत्र के योगदान को नमन किया | 101वी जयंती के मौके पर केंद्रीय संचार एवं रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निवर्तमान सरकार्यवाह सुरेश (भैया जी) जोशी ने डाक टिकट जारी किया। उनके साथ भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी नड्डा और केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए | दत्तोपंत ठेंगड़ी जी से हम सब परिचित है लेकिन अगर एक वाक्य में कहना हो तो हम उन्हें आधुनिक भारत के सबसे प्रभावी आर्थिक चिंतक कह सकते है |

भारतीय मज़दूर आंदोलन में संघर्ष की जगह सहयोग की भावना को स्थापित करने में सबसे महत्वपूर्ण नाम दत्तोपंत ठेंगड़ी का है | विरजेश उपाध्याय ने अपने लेख में दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के शुरुआती जीवन और कैसे वे AITUC और INTUC में कुछ समय तक कार्य करने और ट्रेड यूनियन से जुड़ी गूढ़ताओं और विचार को समझने के बाद जुलाई १९५५ में श्रमिको को राष्ट्रीय मूल्यों और राष्ट्रवाद से जोड़ने लिए भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की इसको बताया | ठेंगड़ी जी ने वामपंथ को न सिर्फ वैचारिक तौर पर चुनौती दिये बल्कि जमीनी स्तर पर वामपन्थ के सामने राष्ट्रवाद खड़ा हो उसके लिए संगठन निर्माण भी किया | वामपंथ को भारतीय परिस्थितियों के लिए अयोग्य माना और इसके लिए विभिन्न सामाजिक समूहों में हो रहे फैलाव और उसके दुष्परिणामों को सामने लाते हुए इसको आम जनमानस में अपने द्वारा स्थापित, पुरे निर्माण प्रक्रिया से जुड़े सभी को स्पर्श करने वाले विभिन्न संगठनो - लघु-उद्योग भारती, किसान संघ, ग्राहक पंचायत आदि - के द्वारा चुनौती देने का काम किया | दत्तोपंत के विचारों को आम मज़दूरों के बीच स्वीकार्यता का अंदाज़ इस बात से होता है कि अपने स्थापना के सिर्फ तीन दशकों में बिना किसी राजनीतिक समर्थन के भारतीय मज़दूर संघ देश का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन बन चुका था |

चीन के राष्ट्रपति शी जिंनपिंग के हाल के विभिन्न वक्तव्यों के कारण पुनः चर्चा में आये "कॉमन प्रोसपैरिटी" के सन्दर्भ में दत्तोपंत के विचारों को रखते हुए अभिजीत ने अपने लेख में उल्लेख किया की ठेंगड़ी ने पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के सैद्धांतिक पक्ष के कमजोरियों को सामने रखते हुए विश्व को एक तीसरे विकल्प को ढूंढने के लिए प्रेरित किया| उनका यह स्पष्ट मानना था की लड़ाई अन्याय के विरुद्ध है न की किसी वर्ग विशेष के | ठेंगड़ी ने मालिक और मज़दूर दोनों को औद्योगिक परिवार का सदस्य माना और राष्ट्रवाद को धुरी मानते हुए समाज हित को दोनों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता बताया | परस्पर विश्वास की भावना बनी रहे और मज़दूर उद्योग को अपना मानते हुए अपनी उत्पादकता बढ़ाने - जो की पुरे समाज की सम्पन्नता के लिए जरुरी है - के लिए प्रेरित हो इसके लिए आय अनुपात की अवधारणा को सामने रखा | श्रमिको को उत्पादन प्रक्रिया में बराबर का हिस्सेदार बनाने के सम्बन्ध के उन्होंने कहा कि श्रमिकों के दो हाथ जिनसे वह श्रम करता है वह उनकी पूंजी ही है| पूंजीवादी व्यवस्था में श्रम को खरीदने की परंपरा है , परन्तु यदि श्रम को पूंजी का दर्ज़ा दिया गया तो श्रमिक भी उत्पादन प्रक्रिया में बराबर का हिस्सेदार बन जायेगा और तभी एक सतत आम समृद्धि की बात भी संभव होगा अन्यथा ये शब्द सिर्फ एक नारा बन कर रह जाएगा जैसा पिछले ६० सालों से रहा है। जितेंद्र गुप्त ने अपने लेख में कहा है कि ठेंगड़ी जी का व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि उनको शब्दों में बांधना बहुत ही मुश्किल है | गुप्त जी ने कहा कि उन्होंने हमारे देश के लिए जो रास्ता दिखाया है , हम उस पर अपने-अपने सामर्थ्य से बढ़ेंगे तो हम जिस चिंतन और परंपरा के लिए कार्य कर रहे हैं , शीघ्र ही यशश्वी होंगे |

दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने कहा था कि पश्चिम में ऐसे प्रयोगों को अपनाया गया जिनसे तत्काल लाभ दिख पड़ता है और इसकी परवाह नहीं की जाती कि मानव-जाति के भविष्य पर उसके क्या दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे | पश्चिम ने अपने आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अँधा धुंध प्रयोग किया और इसके कारण आज वह पूर्व से ज्यादा विकसित है | भारतीय दृष्टिकोण में प्रकृति को माता का सम्मान दिया गया है | हमारी संस्कृति ने प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन में भी सावधानी बरती है और इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है की भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों की पर्याप्त मात्रा बची रहे |

उनके चिंतन में यह बात भी स्पष्ट तौर पर आया कि व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास होना चाहिए और उसे अभी सुख प्राप्त होने चाहिए और इसकी प्राप्ति के अनुरूप सामाजिक और आर्थिक रचना खड़ी हो | उन्होंने अपने आर्थिक चिंतन में इस बात पर जोर देते हुए मानवतावादी दृष्टिकोण को समाज के सामने रखा है | दीनदयाल उपाध्याय के साथ उनके विचार भारतीय चिंतन को युगानुकूल प्रस्तुत करते है | वर्तमान समय में उनके विचार और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गए है। उनका अर्थ दर्शन पूर्णतया सार्थक हैं और उसी से सार्थक विकास सम्भव है। भारत की किसी भी सरकार को श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के विचारों को समझना होगा।

एकात्म दृष्टि रखने वाले दत्तोपंत भले ही अपने आर्थिक विचारों के लिए ज्यादा चर्चा में रहते हों परंतु उन्होंने अर्थ चिंतन को सामाजिक चिंतन का एक हिस्सा समझा। उन्होंने अर्थिक चिंतन के साथ समाज के मजबूती की बात को हमेशा बल दिया। जोसेफ़ स्टिग्लिट्ज़ यह बात "सामाजिक सद्भाव अर्थ विकास के लिए जरूरी है" को आज के समय में समझ कर कहते हैं परंतु दत्तोपंत उस बात को हमेशा से कहते रहे। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि हम जब एक समरस और सतत विकास वाले विश्व की कल्पना करते है तो वह दत्तोपंत ठेंगड़ी के विचारों से संभव दिखता है | इस सन्दर्भ में शिखा गौतम ने कट्टरपंथ के सूचना क्रान्ति के दौर में हो सकने वाले उभार और उससे जुड़ी प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित लेख आतंकवाद और कट्टरपंथ की चुनौतियों से निपटने में मार्ग के तौर पर ठेंगडी जी द्वारा प्रतिपादित समाजिक समरसता का सिद्धांत की महत्वपूर्ण भूमिका देखती है |

हमारे प्रकाशन:

1) Democracy, Capitalism, Labour Movement: In Quest of Decent Work:
https://www.suruchiprakashan.com/democracy-capitalism-labour-movement

2) Decent Wage : It's not Just About Workers :
https://www.suruchiprakashan.com/decent-wage

3) Industry 4.0 and the Future of Work(er) :
https://www.suruchiprakashan.com/industry-4-0-and-the-future-of-work-er